बहुमत और कुशादी डण्डी, दियो न रहने इक पाखण्डी।
पंचमकाल विषें जिनराई, चांदनपुर प्रभुता प्रगटाई।

क्षण में तोपिन बाढ़ि हटाई, भक्तन के तुम सदा सहाई।
मूरख नर नहिं अक्षरज्ञाता, सुमरत पण्डित होय विख्याता।

सोरठा

करे पाठ चालीस दिन, नित चालीसहिं बार।
खेवे धूप सुगन्ध पढ़, श्री महावीर अगार।
जन्म दरिद्री होय अरु, जिसके नहीं सन्तान।
नाम वंश जग में चले, होय कुबेर-समान।

आरती श्री महावीर स्वामी

जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा।
वर्द्धमान महावीर वीर अति, जय संकट छेवा।। टेक ।।
सिद्धारथ नृप नन्द दुलारे, त्रिशला के जाये।
कुण्डलपुर अवतार लिया, प्रभु सुर नर हर्षाये।। ॐ जय...
देव इन्द्र जन्माभिषेक कर, उर प्रमोद भरिया।
रूप आपका लख नहिं पाये, सहस आंख धरिया।। ॐ जय...
जल में भिन्न कमल ज्यों रहिये, घर में वाल यती।
राजपाट ऐश्वर्य छोड़ सब, ममता मोह हती।। ॐ जय...
बारह वर्ष छद्मावस्था में, आतम ध्यान किया।
घाति-कर्म चकचूर, चूर प्रभु केवल ज्ञान लिया।। ॐ जय...
पावापुर के बीच सरोवर, आकर योग कसे।
हने अघातिया कर्म शत्रु सब, शिवपुर जाय बसे।। ॐ जय...
भूमंडल के चांदनपुर में, मंदिर मध्य लसें।
शान्त जिनेश्वर मूर्ति आपकी, दर्शन पाप नसें।। ॐ जय...
करुणासागर करुणा कीजे, आकर शरण गही।
दीन दयाला जगप्रतिपाला, आनन्द भरण तुही।। ॐ जय...